"स्कूल आ पढ़े बर, जिनगी ला गढ़े बर"

शाला प्रवेश उत्सव

(सम्बंधित विद्यालय में आयोजित विभिन्न नवाचार)

सत्र 2023-24 के लिए

प्रस्तुति-- एडमिन टीम छत्तीसगढ़

नवाचारी गतिविधियाँ समूह भारत

संदेश

नवीन शिक्षा सत्र 2023-24 एवं शाला प्रवेश उत्सव की आप सभी को बहुत बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ

आदरणीय शिक्षक/शिक्षिकाओं, नवीन शिक्षा सत्र का जब आगाज होता है तो हम सभी के मन में बहुत सी उत्सुकता एवं लक्ष्य होते हैं। हमारे द्वारा बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बहुत से योजनाओं पर पहल किया जाता है जिससे बच्चों के हित में कार्य हो सके । इसी क्रम में सत्र की शुरुआत में एक सबसे महत्वपूर्ण कार्य होता है "शाला प्रवेश उत्सव" । इस दिन विद्यालय में नवीन प्रवेश लेने वाले नन्हे-मुन्ने बच्चों का आत्मीयता से स्वागत किया जाता है। जैसे नाम से ही पता चला रहा है कि यह एक प्रकार का उत्सव अर्थात आनंद व खुशी के साथ मनाया जाने वाला शुभ कार्य होता है।

जिस प्रकार हमारे परिवार में कोई नए सदस्य का आगमन होता है तो वह उत्सव का माहौल होता है । पूरे उल्लास के साथ हम नये सदस्य का स्वागत करते है । इस प्रकार से विद्यालय परिवार में नव प्रवेश लिए नए मेहमान के स्वागत के लिए "शाला प्रवेश उत्सव" भी मनाया जाता है ताकि नव प्रवेशी बच्चो को पहले दिन से ही भयमुक्त और आनंददायक माहौल का अनुभव हो सके और वह स्कूल के माहौल में घुल मिल कर आगे बिना किसी झिझक के लगातार विद्यालय में अध्ययन कर सके। साथ ही "शाला प्रवेश उत्सव" के माध्यम से प्रत्येक बच्चे को शिक्षा से जोड़ने की कोशिश की जाती है । ताकि कोई भी बच्चा अपने मूलभूत अधिकार से वंचित न रह सके। "शाला प्रवेश उत्सव" के दिन विद्यालय के सभी स्टाफ, पालक गण, शाला विकास समिति के सदस्य, जनप्रतिनिधि, स्व सहायता समूह के सदस्य, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता/सहायिका, विद्यार्थी आदि मिलकर "नव प्रवेशी बच्चों" का तिलक लगाकर, मिठाई खिलाकर, पुस्तक एवं गणवेश प्रदान कर स्वागत कर विद्यालय में उनके प्रथम दिवस को यादगार बनाते हैं।

साथियों "शाला प्रवेश उत्सव" में उपरोक्त औपचारिक कार्यक्रम लगभग सभी विद्यालय में आयोजित होते हैं। साथ ही विभाग की ओर से भी बहुत से निर्देश जारी किए जाते हैं जिससे इस दिन को खास बनाया जा सके। अब बात आती है कुछ विशेष नवाचारों की जो "शाला प्रवेश उत्सव" के दौरान औपचारिक कार्यक्रम के अतिरिक्त कुछ विद्यालय में आयोजित किए जाते हैं। इन नवाचारों के द्वारा "शाला प्रवेश उत्सव" को और उत्कृष्ट बनाया जाता है। भारत के सभी राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों से जुड़े देश के सबसे बड़े नवाचारी शिक्षकों के समूह "नवाचारी गतिविधियाँ समूह, भारत" जो स्व-प्रेरणा से कार्य कर रहा है। इस पुस्तिका के माध्यम से हम हमारे समूह की ओर "शाला प्रवेश उत्सव" संबंधित कुछ नवाचार आप सभी को सादर प्रेषित कर रहे है। जिसे अपनाकर आप इस दिन को "नव प्रवेशी बच्चों" के लिए और ज्यादा यादगार बना सकते हैं।

संजीव कुमार सूर्यवंशी
प्रभारी प्रधान पाठक
शास. पूर्व मा. विद्यालय नन्दौरकलाँ
वि.ख. एवं जिला- सक्ती (छ.ग.)
समूह प्रमुख
नवाचारी गतिविधियाँ समूह भारत

1 "नव प्रवेशी बच्चों के हाथों की निशानी"

📙 उद्देश्य:-- नवीन और उत्साह पूर्वक तरीके से शाला प्रवेश उत्सव मनाकर नवप्रवेशी बच्चों के विद्यालय में प्रथम दिवस को यादगार बनाना |

📕 सामग्री:-- सफेद ड्राइंग सीट एवं फैब्रिक कलर

📘 क्रिया / गतिविधि:-- शासन के निर्देशानुसार हर विद्यालय में शाला प्रवेश उत्सव मनाया जाना होता है। हमारे द्वारा प्रति वर्ष इस दिन को नव प्रवेशी बच्चों के लिए यादगार बनाने के लिए हमारे विद्यालय में बहुत ही नवीन तरीके से शाला प्रवेशोत्सव मनाया जाता है। जिसमें सभी बच्चों के हाथ की निशानी ड्राइंग सीट पर ली गई है । सत्र 2022-23 के फोटो ग्राफ संलग्न है।

📕 लाभ --

1 बच्चों का प्रथम दिवस यादगार बना जिससे वे विद्यालय के प्रति आकर्षित रहेंगे ।

2 बच्चे हाथों की निशानी वाला ड्राइंग सीट दीवार लगा हुआ देखकर खुश होते रहते हैं।

3 पालकों में भी इस कार्यक्रम को लेकर काफी उत्साह देखा गया ।

📘 प्रस्तुति---

श्री संजीव कुमार सूर्यवंशी (प्रभारी प्रधान पाठक)
श्री मदन मोहन जायसवाल (शिक्षक)
श्रीमती दीपिका राठौर (शिक्षक)
शास. पूर्व मा. विद्यालय नन्दौरकला
वि.ख. एवं जिला:-- सक्ती (छ.ग.)

2️⃣ "हमारे बगिया के नये फूल"

📙 उद्देश्य:-- नवाचारी तरीके से शाला प्रवेश उत्सव मनाकर नवप्रवेशी बच्चों के प्रथम दिवस को खास बनाना

📕 सामग्री:-- विभिन्न रंग के ड्राइंग सीट, गोंद, कवर पेन आदि

📘 क्रिया / गतिविधि:--

जब बच्चा पहली बार स्कूल आता है तो उससे उसके परिवार को शाला परिवार से बहुत सारी उम्मीदें जुड़ीं होती हैं। जिस तरह एक बगिया में विभिन्न प्रकार के फूल खिले रहते है उसी प्रकार बच्चों के लिए स्कूल एक बगिया की तरह होती है, जहां शिक्षक बगिया का देखरेख करने वाला माली व बच्चें बगिया में खिले हुए बहुत ही सुंदर, मोहक एवं खुशबू युक्त फूल की तरह होते हैं जिन्हें शिक्षक अपनी शिक्षा रूपी ज्ञान से सींचता है व प्यार दुलार से उनकी देखभाल करता हैं। बच्चों को शिक्षा के साथ-साथ नैतिक व सामाजिक ज्ञान दिया जाता है। जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।

📕 लाभ --

1️⃣ बच्चों का प्रथम दिवस यादगार बना जिससे वे विद्यालय के प्रति आकर्षित रहेंगे ।

2️⃣ बच्चों को फूलो की तरह मानना एक प्रकार का सकरात्मक संदेश इस विद्यालय द्वारा समाज के लिए दिया गया है ।

3️⃣ पालक भी इस तरह कार्यक्रम से विद्यालय के प्रति विश्वास प्रकट करते हैं।

📗 प्रस्तुति--

श्री हीरालाल बघेल (प्र.पा.)
श्रीमती ओम कुमारी पटेल (स.शि.)
श्री चिंतामणि गुप्ता (स.शि)
श्रीमती निर्मला सिदार (स.शि.)
शा. प्राथ. शाला शंकरपाली
वि.खं.:-- पुसौर जिला:-- रायगढ़ (छ.ग.)

3 "पगड़ी पहनाकर बच्चों का स्वागत"

📙 उद्देश्य:-- छत्तीसगढ़ियाँ परम्परा के अनुसार नवप्रवेशी बच्चों का पगड़ी पहनाकर स्वागत करना

📕 सामग्री:-- पगड़ी हेतु कपड़ा

📘 क्रिया / गतिविधि:-- हमारे छत्तीसगढ़ में पगड़ी की एक विशेष परम्परा और महत्व होता है। इसी से प्रेरित होकर हमारे P/S & M/S विद्यालय में संयुक्त रूप से कक्षा-पहली एवं छठवीं के नवप्रवेशी बच्चों का स्वागत पुस्तक, गणवेश भेंट सहित छत्तीसगढ़ियाँ पगड़ी पहनाकर किया जाता है।

📕 लाभ --

1️⃣ बच्चों के प्रथम दिवस यादगार बना जिससे वो विद्यालय के प्रति आकर्षित रहेंगे ।

2️⃣ पगड़ी से बच्चे छत्तीसगढ़ी संस्कृति को भी जान पायेंगे।

3️⃣ इस प्रकार के कार्यक्रम आयोजित होने से जनप्रतिनिधिओं एवं पालकों में विद्यालय के प्रति आकर्षण बढ़ता है।

📗 प्रस्तुति--

श्री विजय ध्रुव (प्रधान पाठक), श्रीमती अनिता राजपूत,
श्रीमती ज्योति मिश्रा, श्री कृष्णकुमार साहू, श्रीमती गायत्री राजपूत
शास. प्राथमिक शाला लालपुरकला
श्री चंद्रकुमार राजपूत (प्रधान पाठक), श्री दरबार राजपूत
श्री युगल राजपूत, श्री रितेश राजपूत, श्री धर्मेंद्र राजपूत
शास. पूर्व मा. विद्यालय लालपुरकला
वि.ख.:-- लोरमी, जिला:-- मुंगेली (छ.ग.)

4 "नव प्रवेशी बच्चों के पैरो की निशानी"

📙 उद्देश्य:-- नवीन तरीके से शाला प्रवेश उत्सव मनाकर नवप्रवेशी बच्चों के विद्यालय में प्रथम दिवस को यादगार बनाना

📕 सामग्री:-- सफेद ड्राइंग सीट एवं फैब्रिक कलर

📘 क्रिया / गतिविधि:-- हमारे विद्यालय में इस दिन नव प्रवेशी बच्चों के शाला प्रवेश को यादगार बनाने के लिए नवीन तरीके से शाला प्रवेशोत्सव मनाया जाता है। इस दिन कक्षा पहली के सभी नवप्रवेशी बच्चों के पैरो की निशानी ड्राइंग सीट पर ली जाती है और उसे दीवार में चस्पा किया जाता है।।

📕 लाभ --

1️⃣ ऐसे कार्यक्रम से बच्चों का प्रथम दिवस यादगार बनता है। जिससे वे विद्यालय के प्रति आकर्षित होते हैं।।

2️⃣ बच्चें अपने पैरों की निशानी विद्यालय के दीवार लगे हुए देखकर खुश होते रहते हैं।

3️⃣ पालकों एवं शाला विकास समिति के सदस्यों की सराहना ऐसे कार्यक्रम के माध्यम से मिलती है।

📘 प्रस्तुति--

श्री श्रीकांत सिंह (प्रधान पाठक)
श्री अजय कुमार कोशले (स. शि.)
शास. प्राथमिक शाला गढ़कटरा
वि.ख. एवं जिला:- कोरबा (छ.ग.)

5️⃣ "पूर्व छात्रों के हार्बेरियम फाईल भेट कर स्वागत"

📙 उद्देश्य:-- नवाचारी तरीके से शाला प्रवेश उत्सव मनाकर प्रथम दिवस से ही बच्चों को पढ़ाई के प्रति आकर्षित करना

📕 सामग्री:-- सम्बंधित हार्बेरियम फाइल

📘 क्रिया / गतिविधि:-- हमारे विद्यालय में इस दिन को नव प्रवेशी बच्चों के लिए यादगार बनाने के लिए हमारे शाला के पूर्व छात्र/छात्राओं द्वारा बनाई गई हार्बेरियम फाइल (विभिन्न पौधे व पेड़ों की जड़ ,फूल ,बीज,पत्तियों से संबंधित फाइल) नव प्रवेशी बच्चों को प्रदान की जाती है। जिससे नये बच्चों को अपनी नई फाइल बनाने में सुविधा हो सके। सभी बच्चे नई फाइल को देखकर बहुत हर्षित होते हैं और वे इसी दिन से बीजों, फूलों, जड़ों व पत्तियों का संग्रहण शुरू कर देते हैं।

📕 लाभ --

1️⃣ बच्चों को प्रथम दिवस ही विज्ञान का एक उपयोगी सामान प्राप्त होता है। जो पढ़ाई के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण होता है।

2️⃣ उक्त फाईल के माध्यम से वे अपनी पढ़ाई तात्कालिक रूप से प्रारंभ कर सकते हैं।

3️⃣ जनप्रतिनिधियों एवं पालकों द्वारा इस कार्य के लिए शुभकामनाएं प्रेषित किया गया है।

📗 प्रस्तुति--

श्री दिनेश चंद्र सिंह (प्रधान पाठक)
श्रीमती स्नेहलता टोप्पो (शिक्षक)
श्रीमती सविता बराई (शिक्षक)
श्रीमती कविता गुप्ता (शिक्षक)
शास. पूर्व मा. विद्यालय आदर्श नगर
वि.ख.:-- सीतापुर ,जिला:-- सरगुजा (छ.ग.)

6️⃣ "नुक्कड़ नाटक,अंगूठे की निशानी एवं एलबम बनाकर नव प्रवेशी बच्चों का स्वागत"

📙 उद्देश्य:-- शिक्षा के प्रति जागरूक करते हुए नवीन तरीके से शाला प्रवेश उत्सव मनाना

📕 सामग्री:-- सफेद ड्राइंग सीट, फैब्रिक कलर एवं बच्चों के फोटोस

📘 क्रिया / गतिविधि:-- हमारे विद्यालय में बहुत ही नवीन तरीके से शाला प्रवेशोत्सव मनाया जाता है।। जिसमें सभी बच्चों के अंगूठे की निशानी से पोस्टर, छठवीं के बच्चों के लिए colours of feather, जिसमें उनकी फोटो लगाई गई हैं। साथ ही नुक्कड़ नाटक के द्वारा पालकों को शिक्षा के प्रति जागरूक किया जाता है।

📕 लाभ --

1️⃣ बच्चों का प्रथम दिवस यादगार बना जिससे वो विद्यालय में भयमुक्त होकर अध्ययनरत करते हैं।

2️⃣ बच्चे अंगूठे की निशान एवं एलबम को देखकर आकर्षित होते रहते हैं। हैं।

3️⃣ स्कूल के नवाचार से प्रभावित होकर कुछ अभिभावकों ने अपने बच्चों को प्राइवेट स्कूल से निकाल कर हमारी शाला में प्रवेश दिलवाया है।

📘 प्रस्तुति--

श्री परमानंद देवांगन (प्र.पा.), श्रीमती प्रज्ञा सिंह (शिक्षक), श्रीमती समीक्षा सिंह (शिक्षक) श्रीमती पूनम मौर्य (शिक्षक),श्रीमती रश्मि टिकरीहा (शिक्षक),श्री खिलेश्वर नेताम (शिक्षक) श्रीमती मनीषा राजपूत (शिक्षक) [शास. पूर्व मा. विद्यालय हनोदा]

वि.ख.:- दुर्ग

जिला:- दुर्ग (छ.ग.)

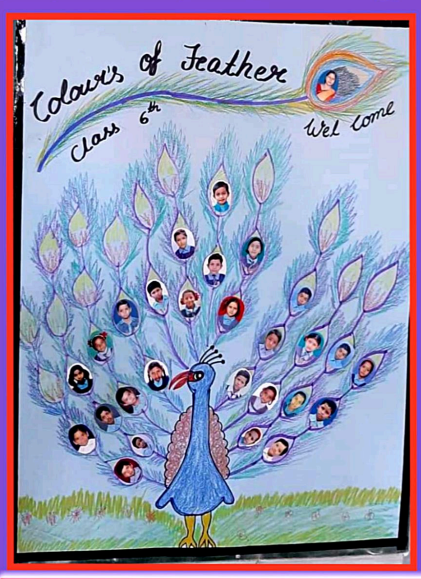

7️⃣ "स्वागत है आपका हमारे द्वार"

📙 उद्देश्य:-- नवीन और उत्साह पूर्वक तरीके से शाला प्रवेशोत्सव मनाकर बच्चो का स्वागत करना

📕 सामग्री:-- ड्राइंट सीट, गोंद, कलर पेन आदि

📘 क्रिया / गतिविधि:-- हमारे शाला में इस दिन सभी नव प्रवेशी बच्चों को दरवाजा नुमा फ्रेम के समक्ष खड़ा कर, तालियां बजाकर स्वागत किया जाता है। साथ ही फ्रेम के साथ फोटो निकालकर, उसे विद्यालय के रखा जाता है। जिसे देखकर सभी बच्चे आनंदित होते रहते हैं।

📕 लाभ --

1️⃣ बच्चों को प्रथम दिवस इस प्रकार के फ्रेम में खुद को पाकर बहुत ज्यादा खुशी का अहसास होता है

2️⃣ पालकों में भी इस कार्यक्रम को लेकर कापी उत्साह देखा गया ।

📗 प्रस्तुति--

श्री रिंकल बग्घा (सहायक शिक्षक)
श्री जनक राम ध्रु (सहायक शिक्षक)
शास. प्राथमिक शाला धरमपुर (स.)
वि.ख.:-- बागबहरा, जिला:-- महासमुंद (छ.ग.)

स्लोगन

शाला प्रवेश उत्सव मनाना है
शिक्षा का अलख जगाना है

कोई ना छूटे अबकी बार
आओ बच्चो शिक्षा के द्वार

सुन ले वो मनटोरा के दाई
पढ़े-लिखे म हावय भलाई

शिक्षा पर है सबका अधिकार
स्वागत है आपका हमारे द्वार

शिक्षा की दीप हम जलाएंगे
देश को शिक्षित बनाएंगे

शिक्षा ऐसी सीढ़ी है,
जिससे चलती पीढ़ी है

ए, बी, सी, डी, ई, एफ, जी
स्कूल में स्वागत है बच्चों का जी

अनपढ़ होना है अभिशाप
कोई न हो अंगूठा छाप

सुना ओ दाई मन सुन ग सियान
लईका ल स्कूल भेजे बर रखा धियान